

## বাংলাদেশের আর্থিক সম্ভাবনা কোনদিকে?

নামঃ সানজারী জুলফিকার

আইডিঃ ১৯১২০৫০৬৪২

কোর্সঃ BEN205

সেকশনঃ ২৪

## गर्मास्य जाराका भन्नायनाः

विद्याप उन्ने प्रियम (ब्रेक्स त्माक्राक्रम ।

विद्याप उन्ने मैंसि व्यार ति स्वार्थित स्वार्थित मिंसि वार्थित स्वार्थित स्वार्येत स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्

त्यात्र व्यक्ति वस्ति जिए तमि व स्परमाद्यास निर्मिक्षित ।

तमी निर्मिक्षितं ज्यात्र विष्मात्यात्मार निर्मिक्षितं ।

विरम्भ वर्षे व्याप्त व्याप्तात्मार निर्मिक्षे व स्वाप्ति ।

निर्मिक्षितं ज्यात्मात्मार निर्मिक्षे व्याप्त निर्मिक्षे व्याप्ति ।

निर्मिक्षेत्र व्याप्तात्मार निर्मिक्षेत्र व्याप्ता ।

निर्मिक्षेत्र व्याप्तात्मार निर्मिक्षेत्र व्याप्तात्मार ।

निर्मिक्षेत्मे विर्मिक्षेत्र व्याप्तात्मार ।

निर्मिक्षेत्र व्याप्तात्मार ।

निर्मिक्षेत्मे विर्मिक्षेत्र व्याप्तात्म ।

निर्मिक्षेत्मे विर्मिक्षेत्मे ।

निर्मिक्षेत्मे विर्मि

कुर्यात । व्यक्ष्यकृष्टं (प्रतिश्वाक् ) वृत्यंत्रकृष्टे व्यक्ष्यंत्रकृषे व्यव्यक्षेत्र भूषि व्यक्षिशं (प्रश्नाव्यक्ष्यं (प्रश्नाव्यक्ष्यः) प्रभा अतं आका । ज्ञांत्य व्यक्षि के लग्ने स्रोधिंड

, peters of our may som son out of the यक्ष्मां भव्यान् लाय अदिया व्यवयास लक्षेत्र र्राष्ट्रात तम् स्त्रीयुष्ट्रेयर्वे गुर्धाद्य याषे । त्याभंत्र ल्याने, प्राल्नापुर्णं अर्थि। ह्यापिनारम् (स्थिशिय गेंडर क्रिह्महार गेर्ड िश्मांड व्यक्तिया अक्ष्यांट व्याय के विकार हमायाय किया विकार विकार विकार विकास व्यक्ति त्यक्ति का क्राल विस्ताह विल्लाह्यक्ता वारंग त्याचा यक्तरं यह्मां यां न्याता म्यात हमल्ड स्थानमा डमल्ल हुड् ल्याल एट्स्ट लंडाह त्यात एक राष्ट्राह उप्ता १ वर्ष समित । विष्ये हुने तकाश्यक्पंत्र लिंग्ये अर्थायाक एक लिंग्यीय लिंग्य ाधिगाड देट उपपाल १३१३ हिस्साल प्रहाण वहामल प्रहाण বিহের সম্পুরের্যার জিন্তিক অভিমুখ্র নার্যর প্রথ या अम्युत्वरात विकार वर्षेत्र क्रिया वर्षा, निष्ण हिमार्जे नामार । यहारा हिम् एकामाला हिन्-- प्यामुनं ठेडा हिल्ले उन्ह ठाल्मा व्याप निश्न প্রতেওহায়ের পর্তম রবাতানি বারে দেশের পর্যামি -क लियमात लिंग्स व्याद्याक के जा हिर्मित

हुं अठ (ते ब्यरी प्राप्त व्याक्षाक्षर राज्य में व्याक में गुर्धात हमाल यार्जातिका । त्याल्यहेत् त्यां क नक्षेत्रास्य अपेखिं उपन् उत्हें ह्या देत हार वर्ष क्या है। १९० हित । विकात विकात भर्षायमा निर्दे त्यादूर आश्रदं भिष्ये राज्यां हिष्ये प्रश्चितं ग्रह्मां याक् न्यातंत यार्थातेका। यव्या द्रीय व्यक्तिय रीय, वर्ष हीय ७१८ व हास्याहाय व्यक्ति वाव-उठा सैस्य स्पन्ना । यहंत्यायका २० सम्द त्यास र्मुरंग्रम् योषव्यायकायुरित भंगार हिल Go पारा धरा त्या प्राप्त प्र डमारिक हिमारा व्याहारू। यार्ज्यातेका हाउठ उपजा में तिका वर्च तिकार तरी राजा राजा भवाधि हुर्यायाण हैएंगार ज्याजा ज्यांत्रीय । विविद्या इत्यापाश्चे अन्ते गर् न्नजम निहारत्यक जान नुस्याया । त्यान वर मुस्याय व्हार ह्या दां अवयन्त्रं पारमण्डं अख्रे वर्त व्यक्तर । त्यांत कुर वृक्ष्यंत्रायम् कंत्र अध्याद्यायम् व्यव् 10 में हे क्या है का अप होड़े का का अप के कि आहे त्मक्याभि त्याद । तजा भ्रमिष्टि प्रस्काउं प्यांड त्यां द्रायां द्राया है है विष्णी है है क्रिक्सिक क्रायं क्र<del>ी जब</del> ठाइंग्रिय कांद्र या क्रि तहर ह्याह लापरक्र दृश् किएक्रिक पर अद्भाव अक्रिका अक्रिका

स्रिक्ट प्रहार क्रम्भत्मीय होड आयेहार ।

लिश्मी लिक विकास त्रिया अस्य यांत्र । । बार्स हा स्थाव्य उहा ता पंत्र यं किंच यान्य हिल लिखं असे कार्य यांत्र वाहिक स्थास स्थाप हिल लिखं असे यांत्र यांत्रिक स्थास स्थाप हिल लिखं असे यांत्र यांत्रिक स्थास स्थाप कार्याचे पायं असे यांत्र यांत्रिक स्थास स्थाप कार्याचे पायं असे असे असे असे असे असे असे असे स्थाप स्थाप कार्याचे देशक स्थापि कार्ये असे स्थापिक स्थाप प्रमास । अह स्थापिक यांत्रिक यांत्रिक स्थापिक स्थाप । अह स्थाप स्थाप यांत्रिक स्थापिक स्थाप । अह स्थाप स्थापिक यांत्रिक स्थापिक स्थाप । अह स्थाप स्थापिक यांत्रिक स्थापिक स्थाप । अह स्थाप स्थापिक स्थापिक स्थापिक स्थाप स्थापिक स्थापिक स्थापिक स्थापिक स्थापिक स्थाप स्थापिक स्थाप स्थापिक स्थापिक स्थाप स्याप स्थाप स

उत् भाषणा तरं भग् भाग यारं भारा। गराउत् अ मह्मारिया स्त्रिक सिन्ध्राश्चिर कार्य वारं निर्म्धि भार्य वारं कार्य वारं कारं वारं कार्य वारं कारं जिल्ला त्राच्य ठाह्मरभूत्र व्यव्यक्ष्य ज्या रिष्ट्रे ग्रन् Mandy (तिका या प्रदेखकार्थ प्रांतर (तेका चेटार (मिकारे यामुखि अप्तरा ध्याच्या । यित्य दिवस्य मिकारे ल्यार इन्समार यदेवतारं यहां तैत मजान्य राउ यामह यरायमा यानिस आंत्रमान्या ७४० (पन्नो अन चितिका मध्य त मध्य मध्य मध्य मध्य मध्य स्थित्रेरिएत त्रिण्याहण योक्ष्य क्षा विवास त्येन वस्थार्ग । मामायुक लारातारा अपर्देन स्पर्हमर्वेश ०गलेर वार्षाः यांच्यापनी त्रोत्वराधे दण्डे ग्राप्ट गत्र अर्थि अस्तर्य है हिन्स्यूरिक निर्द्धापय असलार्थन क्यात हिन्तु इपात की लिक्स के विद्यालय हास्याउत्त ठाटा दिएट । प्राच्यापण ज्यान कार्य हेयामां, हिलाभिष् त्याचा मर्यातहारात ठंड अपिरेड मुभारामे प्रह यह्या यार्ट्यातेब्यु हिंसे असे द्यानेब्या अप्रांत्र अवं ठंड ठाडारेयपुरं जख्यान हम द्रातिकार द्रवेस्प्र ठाह न्यां याम्य व्याप्त हात्रमात हात्रमा भूमा व्याप्त 2012 21 DE

5059 स्टिंग अपि २० ५१ अपेट तकारे लाख्ये महाद्वा ग्राम्ट प्रत्यापका मुद्ध प्रधा मिट्ट व्याप क्रिंग क्रांग्य क्र अभूष थाक प्रभूप क्षेत्र अर्था अर्था ।

उभ्राम क्षेत्रका प्राकुश्च क्षेत्रका व्यक्षित क्षेत्रका विकाल व्यक्षित क्षेत्रका विकाल विताल विकाल विकाल

उत्ताम् याया क्ष्म अंत्र तिहार गृह यांन्याविका ; क्षास्त्र विकास वितास विकास वितास विकास त्रारुव्या प्रमुखेन वे त्रायंत्रां पांतुंबर क्रेट्टी हे क्यांत्र तर्म स्पाल स्प्रांच रामंत्र क कार्यं तर्म व्याप्त स्प्रांच कार्यं त्रायं प्रमुखे । इ-क्यारांत्र अकि था उच्चार्यं स्प्रांचा स्पार्ट पांतुंबर । इ-क्यारांत्र अकि था उच्चार्यं त्रायं ५० -४७ अस्प स्थापंत्र स्थापंत्र स्थापंत्र स्थापंत्र स्थापंत्र व्यापंत्र प्रमुखे अस्प अंतुंबर व्यापंत्र स्थापंत्र पांत्रां व्यापंत्र त्रींवर्यं प्रमुखे वीत्र त्रायंत्र अस्पात्र आधा प्रांचित्र पांतुंबर स्थापंत्र पांत्रं पांत्रांवर अपण्य त्राव्यं व्यापंत्र प्रमुखे अस्ति व्यापंत्र प्रमुखे अस्म व्यापंत्र प्रमुखे विद्यं पांत्रांवर्यं अस्म व्यापंत्र विद्यं प्रांचेत्र अस्म व्यापंत्र व्यापंत्य व्यापंत्र व्य अर्थन्त्र क्ष्म क्ष्म क्ष्म वाराह । अर्थन्त्र क्ष्म क

सिक्षित्रक्षित्र सार्वास्त सार्वास सार्

गृह स्पाक विश्व स्पृत्-त्यात क्षक त्राकृष्ट्य श्राह्मक गृह स्पाक्ष व्यावका व तांग, ठाल ।

पाम युवमंत्र उप्रिक्टम तिर्दा प्रथ अस उप्ताप दिव्यु

एपर्यम्भ भिष्म उपक्रामाल्य ठाक क्षिम्यामार मर्व होत्या अश्विक्ट उप्ताप्त उप्ताप्त पांचा भिष्मित्य प्रिक्यामार प्रक्रिक व्युक्ति उत्व व्यक्षिकण उत्ताप्ति त्याचा प्राप्त व्यक्षिक व्यव्याप्त युवस्ति अस्ति व्यक्ष्मित प्रथाया । उठान माम पायाम (त्यावा ठाने अमेरि अस्मित अव्यापिक माम प्राप्ति प्रक्रिक प्रविच्या प्रवासिक प्रविच्या प्रवासिक प्याप प्रवासिक प्रवासिक

टण्डि (तिका गर्डेंट अभ्यतंत्रीत ठंट मृह् इत्व वार्ड्जातिका विवादार वार्डांड हिम वार्डाट हार्ड प्रथा आउं द्राब्बेंड लगाडा नहें वहं अव्युक्त शास्त्र आया आया द्राब्बेंड लगाडा नहें वहं अव्युक्त वार्डांड निवाद्य ह्या अव्युक्त वार्डांड निवादेंड आया वार्वेंड लगाडा निवादार वार्डांड निवादार वार्डांड निवादेंड आया क्राया वार्डेंड ह्या क्राया वार्डेंड निवादार वार्डांड निवादार वार्डेंड आया क्राया वार्डेंड व्याव वार्डेंड वार्ड वार्डेंड . पार्वप्राप्तिका दुअरंत्रकथुण (एका। तका व कर्त्रीहर हाप् Oneis मनीत्रका उट्टाह उत्तिकात । स्टिस्ट प्रत्या उपरंच्यातेका हा प्रकार प्राहा ग्रेयाहा ह्याह तांत्र साठा विक्ति यात्री किमिव्य म्लीहीन २१० ठाइ । ठाम्मार्ग् उपल्लामाल यहुमात यह उद्गार यह राह्म राह्म स्ति तक अपरण गेंड लिलाव (तर्ह अयरण उत्मार्भेनी) वित्र प्रकाश भार उत्राह आया प्रवास्त्र मा वर द्वार अर्डि त्या भंग कि तमित असिट हार्यत सिकास्त लाम्यक्षिय अर् ग्रह । व्याकात्मिका यार्वेप्पतिकां । याहर हट क्रियाहुट महाउद लिक्स म्बाह हिन्द त्रीह्यात त्रीयुक्त त्याहाण आवत् । यात्र क्यांत्र त्याव्यति अर्डिय प्रधित प्रधित होत्य एवत् अरहा भाग पार्जातका अंख्याउँ शुक्क हीत क्या काहि (ताकार मिथ् निष्ये हुर्ह्याम् तथा यस्य यात्री तिष्यं यात्रात्य द्रवामार्ग अंधि अंधि कार्य कार्य विकार अत्याहित स्वाहित अल्ला हार्या स्वाहित स्वाहित ल्याकार हिल्हा होकाउँ विकास क्ष्मिक महिल होकार विकास क्ष्मिकारक प्राचीत क्ष्मिकारक प्राचीत क्ष्मिकारक प्राचीत न्याकील दाम्य आधिक व्यक्तिक कर्णा निवासी हिंग्येप्रिंड किक्स (तहार गड़ स्टि (मडकार) राहुमीहांड उप्डिस (ताति क्या आखे प्रायुक्त (त्राक्तर

## भग्नीिक हमि वाद्य क्यान महि कार्यिकार